FORESIGHT

नाम	: SAMPLE_STONE
पुरुष / स्त्री	: पुरुष
जन्म स्थान : देश	: India
प्रांत / झेत्र	: /
शहर	: DELHI
जन्म दिनांक	: जनवरी १, २०००
जन्म दिन (कैलेन्डर / ज्योतिषीय)	: शनिवार / शुक्रवार
जन्म समय	: ५:०:० बजे
विक्रम संवत (चैत्रीय / कार्तिकीय)	: २०५६ / २०५६
बंगाली सन	: १४०६
कोलम वर्ष	: ११७५
फुलशी वर्ष	: 0
ऋतु	: शिशिर
चाँद्र मास (चैत्रीय)	: पौष
चाँद्र मास (कार्तिकीय)	: मार्गशीर्ष
चाँद्र मास (बंगाली सन)	: पौष
चाँद्र मास (कोलम वर्ष)	: धनु
चाँद्र मास (फुलशी वर्ष)	: —
पक्ष	: कृष्ण
तिथी (सूर्योदय समय / जन्म समय)	: ९ / १0
जन्म समय (घटी पल में)	: ५४—घटी २२—पल ४५—विपल
रेखांश / अक्षांश	: ७७:१३ पूर्व / २८:३९ उत्तर
क्षैत्रीय समय	: + ५:३0:0 बजे
स्थानिक समय संस्कार	: — 0:२१:८ बजे
युद्ध / ग्रीष्म समय संस्कार	: 0:0:0 बजे
स्थानिक जन्म समय	: ४:३८:५२ बजे
सूर्योदय / सूर्यास्त (स्टैन्डर्ड समय में)	: ७:१४:५४ बजे / १७:३५:१५ बजे
काल समीकरण	: — 0:१:१८ बजे
सांपातिक काल जन्म समय पर	: ११:१८:३९ बजे
अयनांश (जन्म समय पर)	: २३:५१:११ बजे

अवकडहा चक्र

लग्न	: वृश्चिक
लग्नेश	: मंगल
राशि / पाया	: तुला/लोहा
राशि स्वामी	: शुक्र
सूर्य राशि (पाश्चात्य ज्योतिषीय)	: मकर
नक्षत्र	: स्वाति
नक्षत्र स्वामी	: राहु
चरण	: २
नाम का प्रथम अक्षर	: रे
योग	: सुकर्मा
करण	: विष्ठि
गण	: देव
योनि	: महिष
नाडी	: अंत्य
वर्ण	: शूद्र
वश्य	: मानव
वर्ग	: मृग

घातक

चाँद्र मास	: माघ
तिथि	: ४—९—१४
दिन	: गुरुवार
नक्षत्र	: शतभिषा
योग	: शुक्ल
करण	: तैतिल
प्रहर	: ४
वर्ग	: सिंह
लग्न	: कन्या
सूर्य	: कन्या
चन्द्र	: धनु
मंगल	: तुला
बुध	: कर्क
गुरू	: वृश्चिक
शुक्र	: धनु
शनि	: सिंह
राहु	: मकर

मंगली विचार

SAMPLE_STONE मंगली है क्योंकि मंगल लग्न से चतुर्थ स्थान में, शुक्र से चतुर्थ स्थान में है।

मंगली दोष लग्न से दूर नहीं होता इस से

विवाहोपरांत पारिवारिक जीवन संघर्षपूर्ण और तनावपूर्ण हो सकता है। जीवनसाथी से मतभेद के कारण वैवाहिक जीवन में सुख की कमी हो सकती है। सास से आपके संबंध मधुर न होने की संभावना है। मंगली दोष शुक्र से दूर नहीं होता इस से कारण विवाहित जीवन में बाधाएं आ सकती हैं। ११ ११ ५

उपयुक्त रत्न

नीलम– शनि का रत्न नीलम है। शनि द्वारा उत्पन्न दोष को दूर करने के लिए तथा उसे बलवान बनाने के लिए आपको नीलम धारण करना चाहिए। नीलम के धारण करने से आपको गृह–भूमि तथा वाहन की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपको मानसिक शांति प्रदान करेगा। संभव है कि इस रत्न के पहनने से आपमें शक्ति, स्फूर्ति और साहस की वृद्धि हो तथा आप कोई नया उद्योग भी प्रारम्भ कर सकें। सवा चार रत्ती का नीलम लेकर, उसे पंच धातु अथवा स्टील की अगूंठी में जड़वाकर, शुक्लपक्ष के किसी शनिवार को सूर्योदय के समय स्वच्छ जल अथवा कच्चे दूध से धोकर अगरबत्ती की धूप दिखाकर, ईश्वर का स्मरण करते हुए मध्यमा में पहनना चाहिए। नीलम पहनने से श्वास संबंधी रोग तथा पैरों के कष्ट दूर हो सकते हैं। नीलम के बदले आप जिरकान, कटैला, नीला तामड़ा और लाजवर्त भी पहन सकते हैं।

साढ़ेसातीशनि के साढ़ेसात वर्ष

आपकी दूसरी साढ़ेसाती २२ अक्तूबर २०३८ से शुरु होकर ७ दिसम्बर २०४६ को समाप्त होगी। इस अवधि में आपके लिए लाभप्रद परिवर्तन होंगे। आपको कोयला अथवा लोहे का व्यापार लाभप्रद रहेगा। इस समय आप प्रगति पथ पर बढ़ते चले जाएंगे। आपकी ढैय्या २५ सितम्बर २०४१ से शुरु होकर १२ दिसम्बर २०४३ को समाप्त होगी। आप परदेश वास कर सकते हैं। आपको बार–बार यात्रा करनी पड़ेगी। आपको इस समय में मिश्रित फल प्राप्त होगा। आप स्वजनों से दूर परदेश में रहेंगे। आपको शारीरिक कष्ट हो सकता है। आपका जीवनसाथी अस्वस्थ हो सकता है। आपकी धन हानि हो सकती है।

आपकी तीसरी साढ़ेसाती ३० अगस्त २०६८ से शुरु होकर ११ अक्तूबर २०७६ को समाप्त होगी। मान–सम्मान, उद्योग–धंधे और द्रव्य प्राप्ति के लिए यह अनुकूल समय है। आपका यश बढ़ेगा और सभी इष्ट कार्य संपन्न हो जाएंगे। संतान की ओर से कुछ चिंता हो सकती है। आपकी ढैय्या ४ नवम्बर २०७० से शुरु होकर २३ अक्तूबर २०७३ को समाप्त होगी। आप अपने जीवन में संघर्ष तो करेंगे परंतु संघर्ष के बाद आपको सफलता प्राप्त हो जाएगी। आपको परदेश में रहना पड़ सकता है तथा बहुत अधिक यात्राएं करनी पड़ सकती है। आप स्थानांतरण के कारण परदेश में रह सकते हैं। आपके कार्यों में रुकावट पड़ सकती है। आपका पुत्र कुसंगति में पड़ सकता है।

चन्द्रमा पर से शनि का गोचर भ्रमण होने के समय आप निराश हो सकते हैं। अधिक परिश्रम करने पर भी आपको वांछित परिणाम प्राप्त नहीं हो पाएंगे। इस अवधि में घोड़ेकी नाल से बनी लोहे की अंगूठी या नाव के लोहे से बनी अगूंठी मध्यमा अगुंली में आपके लिए पहनना उचित होगा। आपको हनुमान मंदिर या शनिदेव के मंदिर में जाना चाहिए। दान में सरसों का तेल तथा काले उड़द देना चाहिए। शनि भगवान की उपासना मंत्रों द्वारा कीजिए तथा शनिवार का व्रत रखना आपके लिए उपयोगी होगा।

योग कारक एवं मारक

सूर्य, चन्द्रमा और गुरु आपके लिए योग कारक है। जब भी योगकारक ग्रहों की दशा या अर्न्तदशा आएगी आप सदैव प्रसन्नचित्त रहेंगे तथा सभी क्षेत्रों में सफलता पाएंगे।

बुध और शुक्र आपके लिए मारक है। जब भी मारक ग्रहों की दशा या अर्न्तदशा आएगी उस समय आप परेशान हो सकते हैं ऐसे समय आपको सावधानी से काम करना चाहिए तथा अनावश्यक जोखिम नहीं लेना चाहिए।

HOROSCOPES RECOMENDED FOR YOU

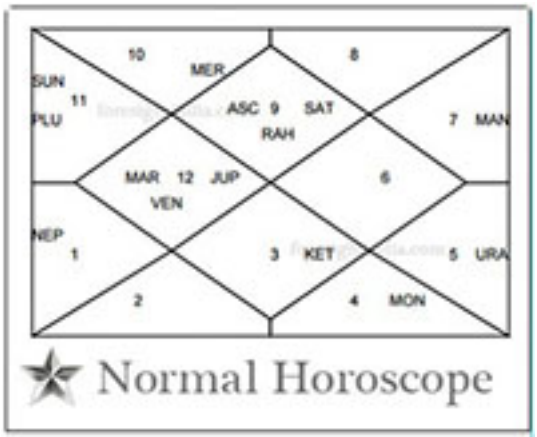

C1 Basic-Horoscope

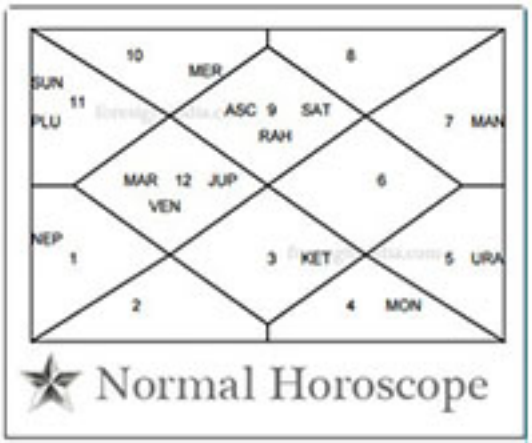

C2 Detailed-Horoscope

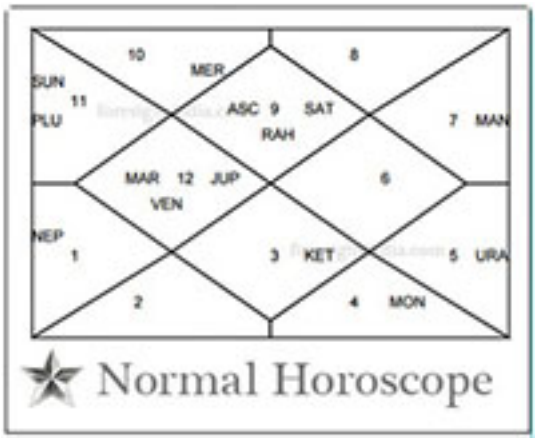

C3 Exhaustive-Horoscope

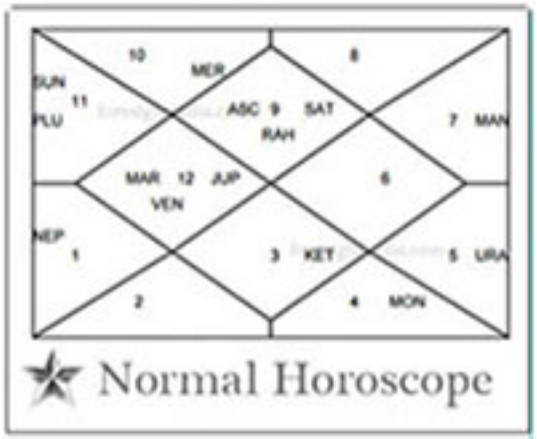

P1 Basic-Prediction

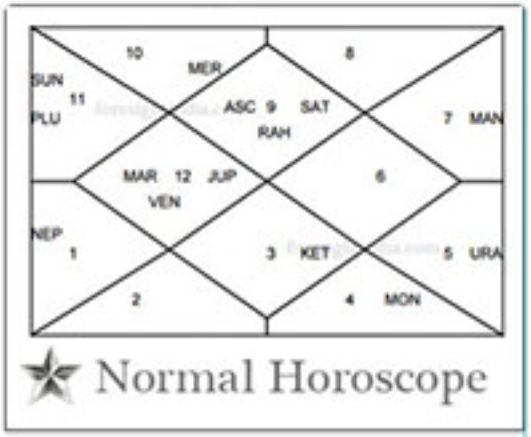

P2 Detailed-Prediction

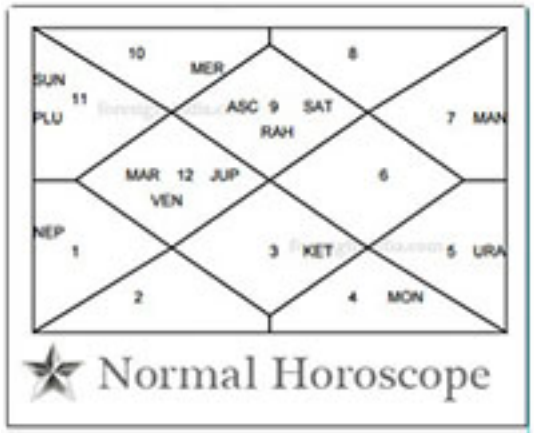

P3 Exhaustive-Prediction